श्री
कुलजम सरूप

निजनाम श्री जी साहिबजी, अनादि अछरातीत ।
सो तो अब जाहेर भए, सब विध वतन सहीत ॥

सिनगार

श्री किताब महासिनगार की जो हुकमें बरनन किया

मंगला चरण

बरनन करो रे रूहजी, हकें तुम सिर दिया भार।
अर्स किया अपने दिल को, माहें बैठाओ कर सिनगार॥ १ ॥

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मेरी आत्मा! तुझे श्री राजजी महाराज ने अपने सिनगार को वर्णन करने का अधिकार दिया है। हम रूहों के दिल को श्री राजजी महाराज ने अपना अर्श बनाया है, इसलिए अपना सब तरह से सिनगार सजकर श्री राजजी महाराज को अपने दिल में बिठाओ।

रूह चाहे बरनन करूं, अखंड सरूप की इत।
सुपने में सत सरूप की, किन कही न हक सूरत॥ २ ॥

मेरी आत्मा चाहती है कि श्री राजजी महाराज के अखण्ड स्वरूप का वर्णन संसार में करूं, क्योंकि इस झूठे संसार में अखण्ड स्वरूप श्री राजजी महाराज की हकीकत किसी ने नहीं बताई।

रात दिन बसें हक अर्स में, मेरा दिल किया अर्स सोए।
क्यों न होए मोहे बुजरकियां, ऐसा हुआ न कोई होए॥ ३ ॥

श्री राजजी महाराज हमेशा ही अपने अर्श में रहते हैं। अब उन्होंने मेरे दिल को अपना अर्श बनाया है, इसलिए मुझे संसार में क्यों न उनकी साहेबी मिले? क्योंकि आज तक कोई ऐसा हुआ ही नहीं और न कोई होगा, जिसके दिल में पारब्रह्म विराजमान हुए हों।

किन कायम द्वार न खोलिया, अव्वल से आज दिन।
जो कोई बोल्या सो फना मिने, किन पाया न बका वतन॥ ४ ॥

दुनियां जब से बनी है आज दिन तक किसी ने भी अखण्ड भूमि की पहचान नहीं कराई। जिस किसी ने कुछ कहा भी है तो सब संसार के अन्दर ही की बात बताई है। अखण्ड वतन की सुध किसी को नहीं मिली।

अर्स बका हक बरनन, सो बीच फना जिमी क्यों होए।
अव्वल से आज दिन लगे, बका सब्द न बोल्या कोए॥ ५ ॥

जबसे दुनियां बनी है तब से आज दिन तक बेहद की वाणी किसी ने नहीं बोली तो फिर इस झूठी मिटने वाली जमीन पर अखण्ड परमधाम का तथा श्री राजजी महाराज के स्वरूप का वर्णन कैसे हो?

Nijanand App

ए चेतन कहावे झूठी जिमी, सो सब जड़ तूं जान।
जो थिर कहावे अर्स में, सो चेतन सदा परवान।। ६ ।।

इस संसार में जो चेतन कहलाते हैं वह भी सब जड़ हैं, अर्थात् मिटने वाले हैं। जो परमधाम में स्थिर कहलाते हैं (महल, वृक्ष, आदि) वह सब सदा ही चेतन और अखण्ड हैं।

ए झूठी रवेसें और हैं, और अर्स में और न्यामत।
ए किया निमूना अर्स जानने, पर बने ना तफावत।। ७ ।।

इस संसार की झूठी रस्में अलग हैं और परमधाम की न्यामत अलग तरीके की है। उस अखण्ड की पहचान कराने के वास्ते ही यह संसार का नमूना बनाया है, परन्तु उनका फर्क बताना सम्भव नहीं है।

सतलोक मृतलोक दो कहे, और स्वर्ग कह्या अमृत।
जो नीके किताबें देखिए, तो ए सब उड़सी असत।। ८ ।।

संसार में सतलोक और मृत्युलोक दोनों का वर्णन किया गया है। स्वर्ग को भी सुख का स्थान बताया है, परन्तु धर्मग्रन्थों को अच्छी तरह से देखने से पता चलता है यह सब झूठे हैं और मिट जाएंगे।

इन झूठी जिमी में केहेत हों, सांच झूठ हैं दोए।
जब आगूं अर्स के देखिए, तब इनमें न सांचा कोए।। ९ ।।

इस झूठे संसार में बैठकर मैं सत और झूठ दोनों को जाहिर करती हूं। यह संसार के सच्चे भी झूठे हैं, मिट जाने वाले हैं। इनका विवरण, जब परमधाम की पहचान होती है, तो पता चलता है, क्योंकि वहां की हर वस्तु अखण्ड है।

अर्स हमेसा कायम, ए दुनी न तीनों काल।
हुआ है ना होएसी, तो क्यों दीजे अर्स मिसाल।। १० ।।

परमधाम सर्वदा ही अखण्ड है। यह दुनियां भूत, वर्तमान और भविष्य में कभी न अखण्ड थी, न है और न होगी तो इसकी उपमा अखण्ड परमधाम को कैसे दी जाए?

ए बारीक बातें अर्स की, इत दिल जुबां पोहोंचे नाहें।
ए हुकम कहावे हक का, इलम हुकम के माहें।। ११ ।।

यह परमधाम की बहुत बारीक बातें हैं, जहां पर यहां का दिल और जबान नहीं पहुंचती। यह श्री राजजी महाराज का हुकम ही वर्णन कराता है तो मैं वर्णन करती हूं, क्योंकि परमधाम की सम्पूर्ण जानकारी श्री राजजी महाराज के हुकम (अर्थात् उन्होंने स्वयं दी है) से हुई।

सत सुख कई सरूप में, कई आनन्द आराम।
कई खुसाली खूबियां, अंग छूटे न आठों जाम।। १२ ।।

श्री राजजी महाराज के अखण्ड स्वरूप में कई प्रकार के अखण्ड सुख, आनन्द, आराम तथा खूबियां हैं, जो रात-दिन रूहों के तन से नहीं छूटतीं।

अर्स सबे है चेतन, हर चीज में सब गुन।
सब न्यामतें एक चीज में, कमी न माहें किन।। १३ ।।

परमधाम में सभी कण-कण चेतन हैं। हर कण में सभी गुण तथा न्यामतें हैं। किसी तरह की कमी किसी में नहीं है।

Nijanand App

इन झूठी जिमी में बरनन, सत सरूप को कह्यो न जाए।
कबूं किन कानों ना सुनी, सो क्यों जीव हिरदे समाए।। १४ ।।

इस संसार की झूठी जमीन है इसलिए श्री राजजी महाराज के अखण्ड स्वरूप का वर्णन करना सम्भव नहीं है, क्योंकि जिनकी हकीकत इस संसार में कभी सुनने को ही नहीं मिली, वह हकीकत जीव के दिल में कैसे आए?

ए लीला जानें सृष्ट ब्रह्म की, जाए पोहोंच्या होए तारतम।
ए दृष्ट पूरन तब खुले, जाए अव्वल आखिर इलम।। १५ ।।

इस लीला को ब्रह्मसृष्टि ही जानती हैं, जिनके पास जागृत बुद्धि का ज्ञान तारतम वाणी है और उनकी ही इस ज्ञान से पूरी दृष्टि खुल गई है, जिन्हें मूल से आखिर तक की हकीकत का पता है।

कहे वेद वैराट कछुए नहीं, जैसे आकास फूल।
ए चौदे तबक जरा नहीं, ना कछू डाल न मूल।। १६ ।।

वेद वैराट को आकाश के फूल की तरह कहा है, अर्थात् जैसे आकाश में फूल कभी नहीं होते इसी तरह से यह संसार कुछ नहीं है। इस चौदह लोकों के ब्रह्माण्ड की न कोई डाली है न ही कोई जड़ है।

कतेबे भी यों कह्या, चौदे तबक ए जोए।
एक जरा नजरों न आवहीं, जाके टूक न होवें दोए।। १७ ।।

कतेब के प्रत्येक ग्रन्थ में भी कहा है कि चौदह तबकों का ब्रह्माण्ड इतना भी नहीं है जिसके दो टुकड़े किए जा सकें।

ऐसा चौदे तबक का निमूना, क्यों हक को दिया जाए।
ए सब्द झूठी जिमी का, क्यों सकिए अर्स पोहोंचाए।। १८ ।।

ऐसे मिटने वाले चौदह तबकों का नमूना, जो परमधाम सदा सत्य है उसे कैसे दिया जाए? क्योंकि इस संसार के सब शब्द झूठे है, इनकी उपमा परमधाम से नहीं दी जा सकती।

कही जाए न सोभा इन मुख, ना कछू दई जाए साख।
एक जरा हरफ न पोहोंचहीं, जो सब्द कहिए कई लाख।। १९ ।।

संसार के मुख से न तो इसकी शोभा का वर्णन हो सकता है और न कोई उपमा ही दी जा सकती है, चाहे लाखों शब्दों का उपयोग क्यों न कर लें। परमधाम के एक कण को भी यहां के शब्द नहीं पहुंचते।

ना अर्स बका किन देखिया, ना कछू सुनिया कान।
तरफ भी किन पाई नहीं, तो करे सो कौन बयान।। २० ।।

अखण्ड परमधाम को न तो किसी ने देखा है और न किसी ने सुना है। यह भी जानकारी नहीं है कि वह कहां है? तो फिर उसकी हकीकत कैसे बताई जाती?

एक कह्या अर्स-अजीम, दूजा सदरतुल-मुंतहा।
तीसरा कह्या मलकूत, जो अर्स फरिस्तों का।। २१ ।।

एक अखण्ड परमधाम कहा गया है, दूसरा अक्षरधाम कहलाता है, तीसरा इस ब्रह्माण्ड का बैकुण्ठ है। बैकुण्ठ में ब्रह्मा, विष्णु, महेश और देवी देवता रहते हैं।

Nijanand App

ए तीनों अर्स मुख थें कहें, पर बेवरा न पासे किन।
ए दुनियां क्यों समझे, हकीकत खोले बिन।। २२ ।।

बैकुण्ठ, अक्षरधाम और परमधाम इन तीनों को अर्श कहते हैं, पर हकीकत का ज्ञान किसी के पास नहीं है। जब तक जागृत बुद्धि का तारतम ज्ञान (पराशक्ति का ज्ञान) न मिले, तब तक दुनियां कैसे समझ सकती है।

हक हुकम जाहेर हुआ, दोऊ हादी हुए मेहेरबान।
खुली हकीकत मारफत, तो जाहेर करूं फुरमान।। २३ ।।

श्री राजजी और श्री श्यामाजी की मेहर हुई तो श्री राजजी के हुकम से हकीकत और मारफत के भेद खुले, जिसे अब मैं जाहेर करती हूं।

ए तीनों गिरो का बेवरा, एक रूहें और फरिस्ते।
तीसरी खलक आम जो, कुन्न केहेते उपजे।। २४ ।।

कुरान में तीन प्रकार की सृष्टियों का विवरण है। एक रूहों (ब्रह्मसृष्टि) की, दूसरी फरिश्ते (ईश्वरीसृष्टि) की तथा तीसरी आम-खलक (जीवसृष्टि) की जो कुंन शब्द कहने से पैदा हुई है।

रूहें गिरो कही लाहूती, और फरिस्ते जबरूती।
और गिरो जो तीसरी, जो कही मलकूती।। २५ ।।

रूहों की जमात अखण्ड परमधाम की रहने वाली है। फरिश्ते (ईश्वरीसृष्टि) अक्षर की सुरताएं हैं। तीसरी जीवसृष्टि बैकुण्ठ की है।

अव्वल खासल खास रूहन की, गिरो फरिस्तों की खास कही।
और कुन्न की तीसरी, ए जो आम खलक भई।। २६ ।।

रूहों को खासल-खास कहा है। फरिश्तों को खास कहा है। तीसरी जीवसृष्टि जो कुंन शब्द के कहने से पैदा कही गई है 'आम खलक' कही जाती है।

दुनियां सरीयत फरज बंदगी, और फरिस्तों बंदगी हकीकत।
रूहों हकीकत इस्क, और इनपे है मारफत।। २७ ।।

दुनियां की जीवसृष्टि शरीयत की फर्ज बन्दगी करती है। ईश्वरीसृष्टि की बन्दगी हकीकत के ज्ञान की होती है। रूहों की इश्क की बन्दगी है। इन्हें हकीकत और मारफत का ज्ञान होता है।

रूहें आसिक सोई लाहूती, जाके अर्स-अजीम में तन।
कह्या हकें दोस्त रूहें कदीमी, जो उतरे अर्स से मोमिन।। २८ ।।

यह रूहें जिनको आशिक कहा है वही परमधाम की रहने वाली हैं। इनके मूल तन परमधाम में हैं। श्री राजजी महाराज के यह सदा से दोस्त हैं जो खेल में उतरे हैं और मोमिन कहलाते हैं।

अर्स कह्या दिल मोमिन, जो मोमिन दिल आसिक।
सो मोमिन कछुए न राखहीं, बिना अर्स बका हक।। २९ ।।

इसलिए मोमिनों के दिल को अपना अर्श बनाया है, क्योंकि यह मोमिन ही श्री राजजी महाराज के आशिक हैं। मोमिनों को सिर्फ अखण्ड परमधाम और श्री राजजी महाराज चाहिए बाकी कुछ नहीं।

Nijanand App

सोई मोमिन जानियो, जो उड़ावे चौदे तबक।
एक अर्स के साहेब बिना, और सब करे तरक।। ३० ।।

उसे ही मोमिन समझना जो चौदह तबकों को रद्द करके छोड़ दे और एक परमधाम के श्री राजजी के बिना और सब छोड़ दे।

उतरे हैं अर्स से, वे कहे महंमद मेरे भाई।
सो आखिर को आवसी, ए जो अहेल इलाही।। ३१ ।।

यह मोमिन परमधाम से उतरे हैं, जिनको रसूल साहब कुरान में अपने भाई बताते हैं। रसूल साहब ने यह भी लिखा है कि मेरे भाई आखिर के समय में आएंगे और खुदा के वारिस यही होंगे।

वे फकीर अतीम हैं, मुझे उठाइयो उनों में।
हक बरकत दुनियां मिने, होसी सब इनों से।। ३२ ।।

मुहम्मद साहब कहते हैं कि मेरे भाई मोमिन फकीरों और यतीमों की तरह होंगे। मुझे भी उनके साथ में उठाना। दुनियां के बीच श्री राजजी महाराज और परमधाम की हकीकत यह मोमिन ही जाहिर करेंगे।

मोहे इलम दिया हक ने, सो इनों को देसी इमाम।
आखिर बड़ाई इनों की, कहे मुसाफ हदीसें तमाम।। ३३ ।।

रसूल साहब कहते हैं कि श्री राजजी ने मुझे बुलाकर कुरान का ज्ञान दिया है। अब इन रूह मोमिनों को स्वयं श्री राजजी महाराज इमाम मेंहदी श्री प्राणनाथजी बनकर ज्ञान देंगे। कुरान और हदीसों में सब जगह इन मोमिनों की महिमा गाई है।

ए मांग्या अलिएं हकपे, मुझे उठाइयो आखिरत।
मेहेंदी के यारों मिने, मैं पाउं निसबत।। ३४ ।।

मुहम्मद साहब के यार अली ने भी खुदा से मांगा था कि मुझे भी आखिर समय में मोमिनों के बीच उठाना। इमाम मेंहदी के यार जो मोमिन हैं उनके बीच मुझे भी जगह मिले।

इमाम जाफर सादिक, उनोंने मांग्या हकपे।
मुझे उठाइयो आखिरत, मेहेंदी के यारों में।। ३५ ।।

जाफर, सादिक जो इमाम हुए हैं उन्होंने भी खुदा से मांग की है कि इमाम मेंहदी के यारों में, अर्थात् मोमिनों में आखिरत के वक्त में मुझे भी उठाना।

मूसा इबराहीम इस्माईल, जिकरिया एहिया सलेमान।
दाऊदें मांग्या मेहेंदी जमाना, उस बखत उठाइयो सुभान।। ३६ ।।

मूसा, इब्राहीम, इस्माईल, जिकरिया, एहिया, सुलेमान तथा दाऊद पैगम्बरों ने मेंहदी के जमाने में खुदा से मनुष्य तन देने के लिए विनती की है।

लिख्या यों फुरमान में, सब आवेंगे पैगंमर।
जासी जलती दुनियां सबपे, कोई सके न मदत कर।। ३७ ।।

कुरान में लिखा है कि आखिरत के वक्त में सब पैगम्बर आएंगे। सारी दुनियां जो दोजख में जल रही होगी अपने पैगम्बरों के पास जाएगी, परन्तु कोई भी उनकी मदद नहीं कर पाएगा।

Nijanand App

आखिर महंमद छुड़ावसी, और आग न छूटे किन से।
सब जलें आग दोजख की, ए लिख्या जाहेर फुरमान में।। ३८ ।।

अन्त में आखिरी मुहम्मद श्री प्राणनाथजी महाराज दुनियां को आवागमन के चक्कर से छुड़ाएंगे और कोई भी इनके सिवाय दोजख की आग में जलने से नहीं बचा सकेगा। ऐसा कुरान में साफ लिखा है।

सब पैगंमर सरमिंदे, होसी बीच आखिरत।
इत छिपी न रहे कछुए, खुले पट हकीकत मारफत।। ३९ ।।

दोजख में जलती दुनियां के सामने वक्त-आखिरत में सभी पैगम्बर शर्मिन्दे होंगे, क्योंकि उस समय किसी की कोई भी बात छिपी नहीं रहेगी। सबको हकीकत और मारफत के ज्ञान की पहचान हो जाएगी।

पीठ देवे दुनी को, सो मोमिन मुतलक।
देखो कौल सबन के, सब बोले बुध माफक।। ४० ।।

जो दुनियां को पीठ देकर छोड़ दे, वही सच्चा मोमिन है। सबके धर्मग्रन्थों में उन्होंने अपनी बुद्धि के प्रमाण से इन शब्दों को लिखा है।

माहें मैले बाहेर उजले, सो तो कहे मुनाफक।
मासिवा-अल्लाह छोड़ें मोमिन, तामें कुफर नहीं रंचक।। ४१ ।।

जो अन्दर से काले हैं और ऊपर से निर्मल दिखाई देते हैं, वह दोगले (मुनाफक) हैं। जो मोमिन हैं वह परमात्मा अक्षरातीत अल्लाह ताला के सिवाय सबको छोड़ देते हैं। उनमें जरा भी झूठ नहीं रहता।

पाक दिल पाक रूह, जामें जरा न सक।
जाको ऊपर ना डिंभक, एक जरा न रखे बिना हक।। ४२ ।।

मोमिनों के दिल और रूह पाक (साफ) होते हैं। उनमें कोई आडम्बर नहीं होता और ऊपर का दिखावा नहीं होता। वह श्री राजजी महाराज के अतिरिक्त और कुछ नहीं चाहते।

सरभर एक मोमिन के, कई कोट मिलो खलक।
जाको मेहेर करें मोमिन, ताए सुपने नहीं दोजक।। ४३ ।।

संसार के करोड़ों लोग एक मोमिन की बराबरी नहीं कर सकते। जिसके ऊपर मोमिन की मेहर हो जाए उसे सपने में भी दोजख की आग नहीं जला सकती।

तुम सुनो मोमिनों वचन, जो धनिएं कहे मुझे आए।
साथ आया अपना खेलमें, सो लीजो सबे बोलाए।। ४४ ।।

श्री महामतिजी कहते है, हे मोमिनो! उस वाणी को सुनो जो धनी ने आकर मुझे बताई है। उन्होंने कहा है कि अपना सुन्दरसाथ खेल में आया है। इन सबको बुलाकर परमधाम ले आओ।

मोहे कह्या आप श्री मुख, तेरी अर्स से आई आतम।
तोको दिया अपनायत जानके, हक बका अर्स इलम।। ४५ ।।

मुझे श्री राजजी महाराज ने अपने श्री मुख से कहा कि तेरी आत्मा परमधाम से आई है और तुम्हें अपना जानकर ही श्री राजजी महाराज का और अखण्ड परमधाम का ज्ञान दिया है।

Nijanand App

निज हुकम आया सिर मोमिनों, जिनके ताले निज नूर।
ऐसे ताले हमारी रूह के, क्यों न करें हम हक जहूर।। ४६ ।।

श्री राजजी महाराज के खुद का हुकम मोमिनों के वास्ते आया है। जिन मोमिनों के पास जागृत बुद्धि की तारतम वाणी है, जब ऐसी वाणी हमारी रूह के ताले हैं तो हम राजजी को जाहिर क्यों न करें?

ब्रह्मसृष्ट हुती बृज रास में, प्रेम हुतो लछ बिन।
सो लछ अव्वल को ल्याय रूह अल्ला, पर न था आखिरी इलम पूरन। ४७ ।।

ब्रह्मसृष्टियां बृज-रास में आई थीं। तब उनके पास प्रेम तो था, परन्तु घर और सम्बन्ध की पहचान नहीं थी। अब रूहअल्लाह (श्यामा महारानी) यहां सबसे पहले तारतम ज्ञान लेकर आई हैं, परन्तु फिर भी इनके पास कुलजम सरूप का ज्ञान नहीं था।

जोलों मुतलक इलम न आखिरी, तोलों क्या करे खास उमत।
पेहेचान करनी मुतलक, जो गैब हक खिलवत।। ४८ ।।

जब तक आखिरी इलम कुलजम सरूप का ज्ञान नहीं मिल जाए, तब तक मोमिन भी क्या करें? उन्हें श्री राजजी महाराज तथा मूल-मिलावा (खिलवतखाना) की पहचान करनी है जो आज दिन तक छिपी हुई थी।

लिख भेज्या फुरमान में, हक रमूजें इसारत।
सो पाइए इलम हक के, जब खुले हकीकत मारफत।। ४९ ।।

श्री राजजी महाराज ने कुरान में यह बातें इशारतों में लिखी हैं। अब यह कुलजम सरूप के ज्ञान से ही हकीकत और मारफत के भेद खुल सकते हैं।

जो कीजे बरनन हक बका, होए जोस मेहेर हुकम।
निसबत हक हादीय सों, और आखिर इस्क इलम।। ५० ।।

यदि श्री राजजी महाराज के स्वरूप की तथा अखण्ड घर (परमधाम) की पहचान कराएं तो यह सब श्री राजजी महाराज की मेहर, जोश, इलम, हुकम और इश्क से ही हो सकता है और इसी से श्री राजजी महाराज, श्यामा महारानी और रूहों की निसबत जानी जा सकती है।

अर्स अरवाहों को चाहिए, खोलें रूह की नजर।
तब देखें आम खलक को, ज्यों खेल के कबूतर।। ५१ ।।

परमधाम की रूहें अपनी आत्मदृष्टि तारतम वाणी (जागृत बुद्धि) से खोलकर देखें और अपनी पहचान करें, तो उनको यह संसार खेल के कबूतर की तरह लगेगा।

तो न लेवे निमूना इनका, ना लेवें इनकी रसम।
हक बिना कछुए ना रखें, अर्स अरवाहों ए इलम।। ५२ ।।

इसलिए परमधाम की रूहें कभी भी संसार की नकल नहीं करेंगी और न उनके रस्मो-रिवाज पर ही चलेंगी। उनको जागृत बुद्धि की तारतम वाणी मिल जाने से पारब्रह्म के बिना और कुछ चाहना बाकी न रहेगी।

Nijanand App

इत सब मुतलकियां चाहिए, बरनन करना मुतलक।
लिख्या आखिर जाहेर होएसी, सूरत बका जात हक।।५३।।

कुरान में लिखा है कि मोमिनों को किसी प्रकार का संशय कभी न होकर दृढ़ ईमान होना चाहिए, क्योंकि इन्हें ही अखण्ड को जाहिर करना है। ऐसे मोमिन ही श्री राजजी के अखण्ड तन हैं जो वक्त आखिरत को जाहिर होंगे।

लिख्या अव्वल फुरमान में, जाहेर होसी कयामत।
जो लों होए इलम मुकैयद, तोलों जाहेर न हक मारफत।।५४।।

कुरान में लिखा है कि ईमान वाले मोमिन ही कयामत को जाहिर करेंगे, क्योंकि जब तक अधूरा ज्ञान हो तब तक पारब्रह्म की पहचान किसी को नहीं होगी।

जेती चीजें अर्स में, सो सब मुतलक न्यामत।
सो मुतलक इलम बिना, क्यों पाइए हक खिलवत।।५५।।

परमधाम की जो भी चीजें हैं वह सब मोमिनों के लिए न्यामतें हैं, इसलिए अखण्ड वाणी के बिना श्री राजजी महाराज और मूल-मिलावा (खिलवतखाना) की पहचान नहीं हो सकती।

ए जो चौदे तबक का बातून, तिन बातून का बातून नूर।
ताको भी बातून नूर बिलंद, केहेना तिन बिलंद का बातून जहूर।।५६।।

चौदह लोकों का बातून बैकुण्ठ है, बैकुण्ठ का बातून अक्षर ब्रह्म है और उसका भी बातून नूर बिलंद (परमधाम) है। परमधाम का बातून श्री राजजी, श्री श्यामाजी और रूहों के स्वरूप हैं जो मूल-मिलावे में बैठे हैं।

ए बातून अर्स बारीकियां, सो होए मुतलकियों इलम।
अर्स बका करें जाहेर, सबों भिस्त देवें हुकम।।५७।।

परमधाम की यह बारीक बातें, जागृत बुद्धि की बातें अखण्ड वाणी से ही समझी जा सकती हैं। अखण्ड परमधाम को मोमिन ही जाहिर करेंगे और सारे जगत को श्री राजजी महाराज के हुकम से अखण्ड मुक्ति देंगे।

बरनन करें बका हक की, हम जो अर्स अरवा।
लेवें सब मुतलकियां, हम सें रहे न कछू छिपा।।५८।।

हम जो अरवाहें (परमधाम की रूहें) हैं, वह अखण्ड अक्षरातीत के स्वरूप को जाहिर करेंगे। हम संशय रहित होकर दृढ़ता के साथ वर्णन करेंगे, क्योंकि हमसे कुछ छिपा नहीं है।

और बात बारीक ए सुनो, अर्स छोड़ न आए मोमिन।
और बातें मुतलक खेल की, करसी अर्स में देखे बिन।।५९।।

हे सुन्दरसाथजी! एक और खास बात सुनो। मोमिनों के असल तन परमधाम को छोड़कर खेल में आए ही नहीं हैं। परमधाम में बिना संसार में आए ही संसार की सब बातें करेंगे।

हम झूठी जिमी में आए नहीं, झूठ रहे न हमारी नजर।
ब्रह्मांड उड़ावे अर्स कंकरी, तो रूहों आगे रहे क्यों कर।।६०।।

परमधाम की एक कंकरी के सामने ब्रह्माण्ड खड़ा नहीं रह सकता है, उड़ जाता है, तो फिर रूहों के आने से यह कैसे खड़ा रह सकता है? इसलिए यह निश्चित हो गया कि हम संसार में आए ही नहीं।

Nijanand App

(हमारे असल तन जब परमधाम में बैठे हैं, तो हम कैसे आए, यह सोचो) क्योंकि यह ब्रह्माण्ड हमारी नजर के सामने टिक नहीं सकता।

और माया देखाई हम को, करी वास्ते हमारे ए।
होसी पूरन हमारी अर्स में, रूहें उमेद करी दिल जे।। ६१ ।।

श्री राजजी महाराज ने हमारे वास्ते ही यह संसार बनाया है और माया का खेल हमको दिखाया है। हम रूहों ने परमधाम में जिस खेल को देखने की चाहना की थी, वह चाहना भी परमधाम में बैठे-बैठे पूरी हो जाएगी।

हम रूहें न आइयां खेल में, हक अर्स सुख लिए इत।
हक हुकमें इलम या विध, सुख दिए कर हिकमत।। ६२ ।।

हम रूहें खेल में आई नहीं हैं, फिर भी श्री राजजी महाराज और अखण्ड परमधाम के सुखों का आनन्द खेल में लिया। श्री राजजी महाराज के हुकम और इलम ने इस तरह से बड़ी हिकमत (कारीगरी) के साथ हमको सुख दिए हैं।

हम तो हुए इत हुकम तले, मैं न हमारी हममें।
ए मैं बोले हक का हुकम, यों बारीक अर्स माएने।। ६३ ।।

इस संसार में मेरे अन्दर अहंभाव नहीं है, क्योंकि हम यहां हुकम के अनुसार काम करते हैं। यह मैं जो बोल रही हूं यह श्री राजजी महाराज का हुकम ही बोल रहा है। मैं तो परमधाम में बैठी हूं। यही तो परमधाम की बारीक गुझ बातें हैं।

हुकम किया चाहे बरनन, ले हक हुकम मुतलक।
करना जाहेर बीच झूठी जिमी, जित छूटी न कबूं किन सक।। ६४ ।।

अब श्री राजजी महाराज का हुकम ही दृढ़ होकर परमधाम और राजजी को इस झूठी जमीन में वर्णन करना चाहता है, जहां किसी का कभी भी संशय दूर नहीं हुआ।

दिन एते हक जस गाइया, लदुन्नी का बेवरा कर।
हकें हुकम हाथ अपने लिया, जो दिया था महंमद के सिर पर।। ६५ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे सुन्दरसाथजी! इतने दिन तक जागृत बुद्धि की अखण्ड वाणी से मैंने श्री राजजी महाराज के हुकम से ही श्री राजजी महाराज और अखण्ड परमधाम को जाहिर किया। श्री राजजी महाराज ने अपना हुकम देकर मुझे काम सौंप रखा था। अब उस हुकम को श्री राजजी महाराज ने अपने हाथ ले लिया है।

॥ प्रकरण ॥ १ ॥ चौपाई ॥ ६५ ॥

हुकमें इस्क का द्वार खोल्या है

अब हुकमें द्वारा खोलिया, लिया अपने हाथ हुकम।
दिल मोमिन के आए के, अर्स कर बैठे खसम।। १ ।।

अब श्री राजजी महाराज ने हुकम अपने हाथ में लेकर परमधाम के दरवाजे खोल दिए हैं और मोमिनों के दिल में स्वयं अर्श बनाकर बैठ गए हैं।

Nijanand App